* R R - 0 2 1 7 / 2 6 0 0 *

RR-0217

Third Year B. A. Examination

March / April – 2010

Hindi : Paper-I

(प्राचीन एवम् मध्यकालीन हिंदी काव्य)

Time : Hours] [Total Marks : **70**

सूचना :

(१)

નીચે દર્શાવેલ ☛ નિશાનીવાળી વિગતો ઉત્તરવહી પર અવશ્ય લખવી.
Fillup strictly the details of ☛ signs on your answer book.

Name of the Examination :

☛ **T. Y. B. A.**

Name of the Subject :

☛ **Hindi - 1**

☛ Subject Code No. : **0 2 1 7** ☛ Section No. (1, 2,.....) : **Nil**

Seat No. :

Student's Signature

(२) **सभी** प्रश्नों के **अंक समान** है ।

१ पठित कविताओं के आधार पर कबीर के वर्ण्य–विषय को स्पष्ट कीजिये । १४

अथवा

१ नागामती के विरह–वर्णन को अपने शब्दों में लिखिये । १४

२ कवि सूरदास की वात्सल्य–भावना का परिचय दीजिये । १४

अथवा

२ तुलसी की विनय–भावना को उदाहरण सहित समझाइये । १४

३ मीरा की कविता में अभिव्यक्त प्रेम की पीड़ा का परिचय दीजिये । १४

अथवा

३ पठित दोहों के आधार पर बिहारी की भक्ति–भावना का स्वरूप स्पष्ट कीजिये । १४

४ टिप्पणियाँ लिखिये : १४

(१) कबीर के गुरू–विषयक विचार ।

अथवा

(१) जायसी की भाषा ।

(२) बिहारी के काव्य में नीति–तत्त्व ।

अथवा

(२) सूर की गोपियाँ ।

५ ससंदर्भ व्याख्या कीजिये : १४

(१) ऐसी बाँनी बोलिये, मन का आपा खोय ।
औरन को सीतल करै, आपहु सीतल होय ।

निंदक नियरे राखिये, आँगन कुटि छवाय ।
बिन साबुन पानी बिना, निरमल करै सुभाय ।

अथवा

(१) राम नाम अवलंब बिनु परमारथ की आस ।
बरषत बारिद बूंद गहि चाहत चढ़न अकास ॥

समरथ कोउ न राम सो तीय हरन अपराधु ।
समयहिं साधे काज सब समय सराहहिं साधु ॥

(२) पिउ वियोग अस बाउर जीऊ । पपिहा निति बोले "पिऊ पीऊ ॥"
अधिक काम दाधै सो रामा । हरि लेइ सुवा गएउ पिउ नामा ॥
बिरह बान तस लाग न डोली । रकत पसीज, भींजि गइ चोली ॥
सूखा हिया, हार भा भारी । हरे हरे प्रान तजहिं सब नारी ॥
खन एक आव पेट महँ ! साँसा । खनहिं जाड़ जिउ, होइ निरासा ॥
पवन डोलावहिं सींचहिं चोला । पहर एक समुझहिं सुख बोला ॥
प्रान पयान होत को राखा ? को सुनाव पीतन कै भाखा ?

अथवा

(२) हेरी म्हा तो दरद दिवाणाँ म्हारा दरद न जाण्या कोय ।
घायल री गत घायल जाणया, हिवड़ो अगण संजोय ।
जौहर की गत जौहर जाणया, क्या जाणया जिण खोय ।
दरद की मारया दर दर डोल्याँ वेद मिलया णा कोय ।
मीराँ री प्रभु पीर मीटांगा जब वैद साँवरो होय ॥